13

भ्वादिप्रकरण में - भू धातु के लट् लकार में रूपसिद्धि-२

भू धातु से भवति यह रूप साधन ही अनुवर्तित है। अतः पृथक् प्रस्तावना अथवा उद्देश्य नहीं दिए गए हैं।

13.1 तिङ्शित् सार्वधातुकम्॥ (३.४.११३)

सूत्रार्थ - धातु के अधिकार में कह गये तिङ् और शित् सार्वधातुकसंज्ञक हो।

सूत्रव्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा विधान की जाती है। इसमें तीन पद हैं। तिङ् (१/१), शकारः इत् यस्य स शित् (१/१), सार्वधातुकम् (१/१) यह संज्ञापरक पद है। तिङ् यह प्रत्याहार है। उसमें तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-वस्-मस्-त-आताम्-झ-थास्-आथाम्-ध्वम्-इट्-वहि-महिङ् ये अट्ठारह प्रत्यय हैं। धातोः यह पञ्चम्यन्त पद अधिकृत है। पदयोजना - धातोः तिङ् शित् सार्वधातुकम्। सूत्रार्थ होता है - धातोः इसके अधिकार में विहित तिङ् और शित् सार्वधातुकसंज्ञक होता है। अर्थात् धात्वधिकरोक्त तिङ् और शित् सार्वधातुकसंज्ञक होता है।

उदाहरण - तिप् तस् झि इत्यादि तिङ् हैं। शप् श्यन् इत्यादि शित् हैं।

13.2 आर्धधातुकं शेषः॥ (३.४.११४)

सूत्रार्थ - धातोः इससे विहित तिङ्शित् से भिन्न प्रत्यय आर्धधातुक संज्ञक होते हैं।

सूत्रव्याख्या - यह सूत्र संज्ञासूत्र है। इस सूत्र से आर्धधातुक संज्ञा विधान की जाती है। इस सूत्र में दो पद हैं। आर्धधातुकम् शेषः यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। धातोः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद अधिकृत है। धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् इस सूत्र से धातोः यह पञ्चम्यन्त पद अनुवर्तित है। पदयोजना होती है - धातोः धातोः शेषः आर्धधातुकम्। शेषः इसका तिङ्-शित्भ्यः

टिप्पणियाँ

अन्यः यह अर्थ है। और उससे सूत्रार्थ होता है - धातोः इससे धातु से विहित तिङ्शित् से भिन्न अन्य प्रत्यय आर्धधातुकसंज्ञक हो। अर्थात् धातोः इस को अधिकृत करके धातु से विहित जो तिङ्भिन्न और शिद्भिन्न प्रत्यय है उसकी आर्धधातुकसंज्ञा इस सूत्र से होती है।

गुप्तिज्किद्भ्यः सन् इस सूत्र से धातु से सन् प्रत्यय विहित है। किन्तु धातोः यह कहकर अर्थात् धात्वधिकार में विहित नहीं है। अतः इसकी आर्धधातुकसंज्ञा नहीं होती है।

उदाहरण - च्लि, सिच्, स्य, तास्, क्त, क्तवतु इत्यादि।

13.3 लिट् च॥ (३.४.११५)

सूत्रार्थ - लिट् के स्थान में तिङ् आदेश आर्धधातुकसंज्ञक होते हैं।

सूत्रव्याख्या - शक्तिग्राहक होने से यह सूत्र संज्ञा श्रेणी में आता है। दो पदों वाले इस सूत्र में लिट् यह लुप्त षष्ठी पद है। अतः लिटः यह प्राप्त होता है। च यह अव्ययपद है। तिङ् शित् सार्वधातुकम् इस सूत्र से तिङ् यह प्रथमैकवचनान्त संज्ञा बोधक पद अनुवर्तित होता है। तथा आर्धधातुकं शेषः इस सूत्र से संज्ञा सम्पर्क आर्धधातुकम् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। लङः शाकटायनस्यैव इस सूत्र से ही यह अव्ययपद अनुवर्तित होता है। इस प्रकार लिटः तिङ् आर्धधातुकम् एव यह सूत्रगतपदों का अन्वय है। उससे सूत्रार्थ होता है- लिट् के स्थान पर विहित तिङ् आर्धधातुकसंज्ञक ही हो। यहाँ इस कारण से ही सार्वधातुकसंज्ञा की व्यावृति हो जाती है।अतः लिट् के स्थान पर विहित तिङ् की सार्वधातुकसंज्ञा नहीं होती है।

13.4 लिङाशिषि॥ (३.४.११६)

सूत्रार्थ - आशीर्वाद अर्थ में जो 'लिङ्' उसके स्थान में 'तिङ्' आदेश उनकी आर्धधातुक संज्ञा होती है।

सूत्रव्याख्या - यह संज्ञासूत्र है। इससे आर्धधातुकसंज्ञा विधान की जाती है। इसमें दो पद हैं। लिङ् यह लुप्तषष्ठी पद है। लिङः यह प्राप्त होता है। आशिषि (७/१)। तिङ् शित् सार्वधातुकम् इस सूत्र से तिङ् यह प्रथमान्त संज्ञिपरं पद अनुवर्तित होता है। आर्धधातुकं शेषः इस सूत्र से संज्ञा सम्पर्क आर्धधातुकम् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। 'लङः शाकटायनस्यैव' इस सूत्र से ही यह अव्ययपद अनुवर्तित होता है। पदयोजना - आशिषि लिङः तिङ् आर्धधातुकम् एव। सूत्रार्थ होता है - आशीर्वादार्थ में विहित लिङ् के स्थान पर जो तिङ् है, उसकी आर्धधातुकसंज्ञा होती है। यहाँ एव के प्रयोग से सार्वधातुकसंज्ञा की व्यावृति हो जाती है। अतः लिङ् के स्थान पर विहित तिङ् की सार्वधातुकसंज्ञा नहीं होती है।

यहाँ सार यह है

धातु से लकार विधान होते हैं। कोई भी लकार तिङ् अथवा शित् नहीं है। अतः सभी लकार आर्धधातुकसंज्ञक हैं। लकारों के स्थान पर तिङ् विधान किया जाता है। यह तिङ् सार्वधातुकसंज्ञक

होता है। परन्तु लिट् के स्थान पर विहित तिङ् और आशीर्वाद अर्थ में विहित लिङ् के स्थान पर विहित तिङ् आर्धधातुकसंज्ञक होता है। जिसके लकार का आदेश तिङ् सार्वधातुकसंज्ञक होता है,वह लकार सार्वधातुक लकार कुछ लोग कहते हैं। परन्तु लकार कभी भी सार्वधातुकसंज्ञक नहीं हैं।

लुट्, लृट्, लुङ् और लृङ् में धातु और लकार के मध्य में तास्, स्य, च्लि, स्य ये विधान होते हैं। वे धातु से विहित तिङ्भिन्न और शित्भिन्न होते हैं। अतः आर्धधातुकसंज्ञक हैं। परन्तु उन लकारों के स्थान पर विहित तिङ् सार्वधातुकसंज्ञक हैं। फिर भी लुट्, लृट्, लुङ् और लृङ् आर्धधातुक लकार यह प्रचार है।

भू ति इस स्थिति में तिप् तिङ् है, धातु से विहित है। अतः तिङ्शित् सार्वधातुकम् इस सूत्र से तिप् की सार्वधातुकसंज्ञा होती है। मूलतः वर्तमाने लट् यहाँ स्पष्ट किया गया है कि लट् कर्तरि अर्थात् कर्ता अर्थ में विहित है। तब - (अग्रिमसूत्र में द्रष्टव्य है-)

पाठगत प्रश्न 13.1

1. सार्वधातुक संज्ञा किसकी होती है?
2. आर्धधातुक संज्ञा किनकी होती है?
3. आर्धधातुकं शेषः यहाँ शेष क्या है?
4. कौनसे लकार सार्वधातुक संज्ञक हैं? उत्तर दीजिए।
5. किन लकारों का आदेश तिङ् आर्धधातुक संज्ञक है?
6. लिङ्देश तिङ् सार्वधातुक है अथवा आर्धधातुक है?
7. किन लकारों का विकरण आर्धधातुक है और वे कौन से हैं?

13.5 कर्तरि शप्॥ (३.१.६८)

सूत्रार्थ - कर्ता अर्थ में सार्वधातुक परे रहते धातु से शप् होता है।

सूत्रव्याख्या - षड्विध पाणिनीय सूत्रों में 'कर्तरि शप्' यह विधिसूत्र है, इससे शप् का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद है। वहाँ कर्तरि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है, और शप् यह प्रथमैकवचनान्त पद है। 'सार्वधातुके यक्' इस सूत्र से सार्वधातुके यह पद अनुवृत्त हुआ है। 'धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिव्याहारे यङ्' इस सूत्र से धातोः यह पद अनुवर्तित होता है। 'प्रत्ययः' यह 'परश्च' यह दोनों सूत्र यहाँ अधिकृत है। पदयोजना - कर्तरि सार्वधातुके धातोः शप् प्रत्ययः परः। सूत्र का अर्थ होता है - कर्ता अर्थ में सार्वधातुक प्रत्यय परे में धातु से परे शप् प्रत्यय हो। तिङ्प्रत्यय

टिप्पणियाँ

परे में होने पर धातु से जो शपादि प्रत्यय विधान किए जाते हैं उनकी विकरण संज्ञा होती है,यह प्राचीन आचार्यों का मत है। अतः शप् यह विकरण है।

उदाहरण - भवति।

सूत्रार्थसमन्वय - भू धातु की विवक्षा से कर्ता अर्थ में लट् है। लट् के स्थान पर तिप् विहित है। तब भू ति यह स्थिति हुई। यहाँ भू धातु से परे तिप् तिङ्शित्सार्वधातुकम् इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञक है। भू धातु से परे कर्ता अर्थ में सार्वधातुक है। अतः कर्तरि शप् इस सूत्र से धातु से शप् प्रत्यय होने पर, शप् प्रत्यय स्थित शकार का 'लशक्वतद्धिते' इस सूत्र से तथा पकार की 'हलन्त्यम्' इस सूत्र से इत्संज्ञा होती है। इत्संज्ञा होने पर 'तस्य लोपः' इस सूत्र से दोनों शकार और पकार का लोप होता है। तब भू अ ति यह स्थिति होती है। तब -

13.6 सार्वधातुकार्धधातुकयोः।। (७.३.८४)

सूत्रार्थ - सार्वधातुक और आर्धधातुक के परे इगन्तअङ्ग को गुण हो।

सूत्रव्याख्या - यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से गुण विधान किया जाता है। इस सूत्र में सार्वधातुकार्धधातुकयोः यह सप्तमी द्विवचनान्त पद है। मिदेर्गुणः इस सूत्र से गुणः यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य यह अधिकृत है। इस सूत्र में किसके स्थान पर गुण होगा यह स्थानी साक्षात् नहीं कही गई है। किन्तु गुणः यह विधेय पर गुणपद को उच्चारित करके गुण विधान किया जाता है। अतः इको गुणवृद्धी इस परिभाषा से इकः इस षष्ठ्यन्त पद को यहाँ उपस्थापित किया जाता है है। यह सूत्र अङ्ग अधिकार में पढा हुआ है। अङ्गसंज्ञक प्रत्यय परे में होने पर ही फलति। अतः प्रत्यय यह पद आक्षिप्त होता है। वहाँ भी सार्वधातुकार्धधातुकयोः यह सप्तमीद्विवचन है। ये दोनों भी प्रत्यय ही हैं। अतः प्रत्यय इसका प्रत्ययोः यह सप्तमीद्विवचन ग्रहण किया जाता है। तब पदयोजना होती है - ''इकः अङ्गस्य गुणः सार्वधातुकार्धधातुकयोः प्रत्ययोः'' यह।

यहाँ इकः और अङ्गस्य ये समान विभक्ति दो पद है। अङ्गस्य यह पद विशेष्य है, इकः यह पद उसका विशेषण है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' इस से तदन्तविधि से इगन्ताङ्ग का यह अर्थ प्राप्त होता है। इगन्ताङ्गस्य यहाँ अल्समुदाय बोधक से स्थानषष्ठी सुना जाता है।और आदेश गुण एकाल् है। अतः अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से इगन्ताङ्ग के अन्त्य इक् का गुण होता है। तत्पश्चात् सूत्रार्थ होता है- सार्वधातुक और आर्धधातुक प्रत्यय परे में रहते इगन्ताङ्ग के अन्त्य अल् के स्थान पर गुण हो। इगन्ताङ्ग का अन्त्य अल् इक् ही है। अतः इक् के स्थान पर ही गुण होता है।

उदाहरण - भू धातु से लट्, तिप्, शप् होने पर भू अ ति यह स्थिति पूर्वसूत्रों में निरूपित की गई हैं। शप् धातोः में विहित होने से शित् प्रत्यय है। अतः तिङ्शित्सार्वधातुकम् इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा होती है। यह परे में रहते भू इसकी अङ्गसंज्ञा होती है। भू यह इगन्त अङ्ग है। अतः सार्वधातुकार्धधातुकयोः इस प्रकृतसूत्र से इगन्ताङ्ग भू इसके अन्त्य इक् ऊकार का गुण प्रसक्त है। ऊकार के स्थान पर स्थानेऽन्तरतमः इस परिभाषा बल से स्थान के आन्तर्य से ओकार भो

अति यह स्थिति होती है। यहाँ ओकार से अच् परे में रहते एचोऽयवायावः इस सूत्र से ओकार के स्थान पर अवादेश होने पर भ् अव् अ ति इस स्थिति में सभी वर्णों का मेल होने से भवति यह रूप सिद्ध होता है।

भवतः - भू धातु से वर्तमानक्रिया वृत्तित्वविवक्षा में वर्तमाने लट् इस सूत्र से कर्ता अर्थ में लट् का विधान होता है। लट् में अनुबन्धलोप होने पर भू ल् यह होने पर लकार के स्थान पर प्रथमपुरुषद्विवचन विवक्षा में प्रत्यय होने पर भू तस् यह होता है। तत्पश्चात् तिङ्शित्सार्वधातुकम् इस सूत्र से तस् की सार्वधातुकसंज्ञा होने पर कर्तरि शप् इस सूत्र से धातु से शप् और अनुबन्धलोप होने पर भू अ तस् यह होता है। शप् प्रत्यय और शित् धातु के अधिकार में कह गये हैं। अतः तिङ्शित् सार्वधातुकम् से उसकी सार्वधातुकसंज्ञा होती है। अतः सार्वधातुकार्धधातुकयोः इस सूत्र से इगन्ताङ्ग भू के ऊकार का गुण होने पर स्थान के आन्तर्य से ओकार होने पर भो अ तस् यह होता है। यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा से परिष्कृतेन एचोऽयवायावः इस सूत्र से अच् परे में होने से ओकार का अवादेश होने पर भव् अ तस् यह होता है। तत्पश्चात् भवतस् इस समुदाय की ''सुप्तिङन्तं पदम्'' इस सूत्र से तिङन्त होने से पदसंज्ञा होने पर, ''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से परिष्कृत होकर ''ससजुषो रुः'' इससे पदान्तसकार का रुत्व अनुबन्धलोप होने पर भवत र् यह होता है। यहाँ रेफ के उच्चारण से बाद में दूसरे वर्ण का उच्चारण का नहीं है, उसके अभाव होने से ''विरामोऽवसानम्'' इस सूत्र से अवसानसंज्ञा होने पर, अवसान परे में होने से ''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा की सहायता से ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः'' इससे पदान्त के रेफ का विसर्ग होने तथा वर्णसम्मेलन होने पर भवतः यह रूप सिद्ध होता है।

भवन्ति - भू धातु से वर्तमाने लट् इस सूत्र से कर्ता में लट्, अनुबन्धलोप होने पर भू लइस स्थिति में लकार के स्थान पर प्रथमपुरुषबहुवचन विवक्षा में झि प्रत्यय होने पर भू झि यह स्थिति होती है। तब -

13.7 झोऽन्तः॥ (७.१.३)

सूत्रार्थ - प्रत्यय के अवयव 'झकार' के स्थान पर 'अन्त्' यह आदेश हो।

सूत्रव्याख्या - साक्षाल्लक्ष्य संस्कारानुरोधक होने से यह विधिसूत्र है। सूत्र में दो पद हैं। झः अन्तः यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। झः यह षष्ठ्येकवचनान्त उद्देश्यबोधक पदम है। और यह स्थानषष्ठी है। अन्तः यह प्रथमैकवचनान्त विधेयबोधक पद है। ''आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'' (७.१.२) इस पूर्वसूत्र से प्रत्ययादिपद का एकदेश प्रत्ययः यह अनुवर्तित होता है, और षष्ठ्यन्त रूप से विपरिणमित होता है। प्रत्ययस्य यह होता है। और ये अवयव अवयवी भावसम्बन्ध में षष्ठी है। उससे प्रत्यय के अवयव झकार के स्थान पर यह अर्थ आता है। प्रत्ययस्य झस्य अन्तः यह सूत्रगत पदों का अन्वय है। अतः प्रत्यय के अवयव झकार के स्थान पर अन्तादेश होता है, यह सूत्र का अर्थ होता है। यहाँ अन्त् यह आदेश तकारान्त है, न कि अकारान्त। यहाँ अकार उच्चारणार्थ है।

उदाहरण - भवन्ति।

टिप्पणियाँ

सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वसूत्रोक्त प्रकार से भू झि इस अवस्था में प्रकृतसूत्र से प्रत्यय के अवयव झि इसके झकार के स्थान पर अन्त् यह आदेश होता है।

अत: प्रकृतसूत्र से अन्त् यह आदेश होने पर भू अन्त् इ यह होता है। वहाँ ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' इस सूत्र से अन्ति इस समुदाय की सार्वधातुकसंज्ञा होती है। झिप्रत्यय कर्ता में विहित है। अत: कर्तरि शप् इस सूत्र से धातु से शप् व अनुबन्धलोप होने पर भू अ अन्ति यह होता है। शप् की भी ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा होती है। तत्पश्चात् ''सार्वधातुकार्धधातुकयो:'' इस सूत्र से इगन्ताङ्ग भू के ऊकार के स्थान पर स्थान आन्तर्य से गुण ओकार होने पर भो अ अन्ति इस स्थिति में ''एचोऽयवायाव:'' इस सूत्र से ओकार का अवादेश होने पर भव् अ अन्ति यह स्थिति होती है। और वहाँ अकार से पर गुण अकार है। अत: 'अतो गुणे' इस सूत्र से अकार और अकार का पररूपैकादेश होने पर भव् अन्ति होकर वर्णसम्मेलन होने पर **भवन्ति** यह रूप सिद्ध होता है।

भवसि - भू धातु से ''वर्तमाने लट्'' इस सूत्र से कर्ता में लट्, मध्यमपुरुष एकवचन विवक्षा में सिप्, अनुबन्धलोप होने पर भू सि यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् 'तिङ्शित्सार्वधातुकम्' इस सूत्र से सिप् की सार्वधातुकसंज्ञा होने पर और कर्ता में विहित होने पर कर्तरि शप् इस सूत्र से धातु से शप्, अनुबन्धलोप होने पर भू अ सि यह होता है। शप् होने से भी ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' इससे सार्वधातुकत होने से ''सार्वधातुकार्धधातुकयो:'' इस सूत्र से भू के ऊकार का गुण होने पर स्थान के आन्तर्य से ओकार होने पर भो अ सि यह स्थिति होने पर ''एचोऽयवायाव:'' इस सूत्र से अच्परे में होने से ओकार के स्थान पर अवादेश होने पर भव् अ सि होकर वर्णसम्मेलन होने पर **भवसि** यह रूप सिद्ध होता है

भवथ: - भू धातु से वर्तमाने लट् इस सूत्र से कर्ता में लट्, मध्यमपुरुष द्विवचन विवक्षा में थस् होने पर भू थस् यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' इस सूत्र से थस् की सार्वधातुकसंज्ञा होने पर और कर्ता में विहित होने पर 'कर्तरि शप्' इस सूत्र से धातु से शप्, अनुबन्धलोप होने पर भू अ थस् यह होता है। शप् होने से भी ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' इससे सार्वधातुक होने से ''सार्वधातुकार्धधातुकयो:'' इस सूत्र से भू के ऊकार का गुण होने पर स्थान के आन्तर्य से ओकार होने पर भो अ थस् यह स्थिति होने पर ''एचोऽयवायाव:'' इस सूत्र से अच्पर में होने से ओकार के स्थान पर अवादेश होने पर भव् अ थस् होकर रुत्व और विसर्ग करने पर भव् अ थ: इस स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर **भवथ:** यह रूप सिद्ध होता है

भवथ - भू धातु से वर्तमाने लट् इस सूत्र से कर्ता में लट्, मध्यमपुरुष बहुवचन विवक्षा में थ होने पर भू थ यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' इस सूत्र से थ की सार्वधातुकसंज्ञा होने पर और कर्ता में विहित होने पर कर्तरि शप् इस सूत्र से धातु से शप्, अनुबन्धलोप होने पर भू अ थ यह होता है। शप् होने से ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' इससे सार्वधातुक होने से ''सार्वधातुकार्धधातुकयो:'' इस सूत्र से भू के ऊकार का गुण होने पर स्थान के आन्तर्य से ओकार होने पर भो अ थ यह स्थिति होने पर ''एचोऽयवायाव:'' इस सूत्र से अच्परे में होने से ओकार

के स्थान पर अवादेश होने पर भव् अ थ होकर भव् अ थ इस स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर **भवथ** यह रूप सिद्ध होता है।

भवामि - भू धातु से 'वर्तमाने लट्' इस सूत्र से कर्ता में लट्,अनुबन्धलोप होने पर भू ल् इस स्थिति में जाते लकार के स्थान पर उत्तमपुरुष एकवचन विवक्षा में मिप्, अनुबन्धलोप होने पर भू मि यह स्थिति होती है। ''तिङ्शत्सार्वधातुकम्'' इस सूत्र से मिप् की सार्वधातुकसंज्ञा होने पर ''कर्तरि शप्'' इस सूत्र से धातु से शप्, अनुबन्धलोप होने पर भू अ मि यह हुआ, शप् भी शित्त्व होने से सार्वधातुक होने पर ''सार्वधातुकार्धधातुकयो:'' इस सूत्र से भू के ऊकार का गुण ओकार होने पर भो अ मि इस स्थिति में ''एचोऽयवायाव:'' इस सूत्र से अवादेश होने पर भव् अ मि यह होता है। तब -

13.8 अतो दीर्घो यञि॥ (७.३.१०१)

सूत्रार्थ - अदन्त अङ्ग के स्थान पर दीर्घ हो यञादि सार्वधातुक पर में रहते।

सूत्रव्याख्या - छ: प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में से साक्षाल्लक्ष्यसंस्कारक होने से विधिकोटि में सह सूत्र आता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। अत: दीर्घ: यञि यह सूत्रस्थ पदों का विच्छेद है। उनमें अत: यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। दीर्घ: यह प्रथमान्त विधेयबोधक पद है। यञि यह सप्तम्यन्त पद है। यह सूत्र अङ्गस्य इसके अधिकार में है। अत: यह पद अङ्गस्य इस षष्ठ्यन्तपद का विशेषण है। अत: येन विधिस्तदन्तस्य इस तदन्तविधि से अदन्त के अङ्ग का यह अर्थ होता है। ''तुरुस्तुशम्यम: सार्वधातुके'' इस सूत्र से सार्वधातुके यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित है। और यह विशेष्यबोधक पद है। यञि यह सप्तम्यन्त अल्बोधक विशेषण है। तत्पश्चात् यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे इस परिभाषा से तदादिविधि से यञादि सार्वधातुक पर में यह अर्थ होता है। इस प्रकार मिलाकर अदन्ताङ्गस्य दीर्घ: यञि सार्वधातुके यह सूत्रस्थ पदों का अन्वय है। अदन्ताङ्गस्य यहाँ अल्समुदायबोधक से स्थानषष्ठी सुना जाता है। अत: अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अदन्ताङ्ग के अन्त्य अल् का ही आदेश हो। उससे सूत्रार्थ होता है - अदन्ताङ्ग के अन्त्य अल् के स्थान पर दीर्घ होता है यञादि सार्वधातुक पर में रहते।

उदाहरण - भवामि।

सूत्रार्थसमन्वय - भव् अ मि इस अवस्था में मिप् प्रत्यय परे में रहते पूर्व के भव् अ इस समुदाय की अङ्गसंज्ञा है। मिप् प्रत्यय सार्वधातुकसंज्ञक और यञादि है। और यह अङ्ग अदन्त है। अत: यहाँ प्रकृतसूत्र से अन्त्याकार के स्थान पर दीर्घ होता है। तब भवा मि यह होने पर वर्णसम्मेलन करने पर **भवामि** यह रूप सिद्ध होता है।

भवाव: - भू धातु से वर्तमाने लट् इस सूत्र से कर्ता में लट्,अनुबन्धलोप होने पर भू ल् इस स्थिति में लकार के स्थान पर उत्तमपुरुष द्विवचनविवक्षा में वस् होने पर भू वस् यह स्थिति होती है। ''तिङ्शत्सार्वधातुकम्'' इस सूत्र से वस् की सार्वधातुकसंज्ञा होने पर ''कर्तरि शप्'' इस सूत्र से धातु से शप्, अनुबन्धलोप होने पर भू अ वस् यह हुआ, शप् भी शित्त्व होने से सार्वधातुक होने

टिप्पणियाँ

पर ''सार्वधातुकार्धधातुकयोः'' इस सूत्र से भू के ऊकार का गुण ओकार होने पर भो अ वस् इस स्थिति में ''एचोऽयवायावः'' इस सूत्र से अवादेश होने पर भव् अ वस् यह होता है। वहाँ वस् पर में रहते विकरणविशिष्ट भव इसकी अङ्गसंज्ञा होती है। वस् यञादि और सार्वधातुक है। अतः ''अतो दीर्घो यञि'' इस सूत्र से अदन्ताङ्ग भव इसके वकारोत्तप अकार का दीर्घ होता है। तब भवा वस् यह होत है। भवावस् यह समुदाय तिङन्त है। अतः तस्य 'सुप्तिङन्तं पदम्' इस सूत्र से पदसंज्ञा होती है। उससे 'ससजुषो रुः' इस सूत्र से पदान्त सकार का रुत्व, अनुबन्धलोप होने पर ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः'' इस सूत्र से रेफ के विसर्ग होकर वर्णसम्मेलन होने पर भवावः यह रूप सिद्ध होता है।

भवामः - भू धातु से वर्तमाने लट् इस सूत्र से कर्ता अर्थ में लट्, लकार के स्थान पर उत्तमपुरुषद्विवचन की विवक्षा होने पर मस्, ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' इस सूत्र से मस् की सार्वधातुकसंज्ञा होने पर उससे परे ''कर्तरि शप्'' इस सूत्र से धातु से शप्, शप् भी सार्वधातुक होने से उसके बाद ''सार्वधातुकार्धधातुकयोः'' इस सूत्र से इगन्ताङ्ग भू के ऊकार को गुण ओकार होने पर, ''एचोऽयवायावः'' इस सूत्र से अच् पर में होने से ओकार का अवादेश होने पर भव् अ मस् यह होने पर मस् के यञादि और सार्वधातुक होने के बाद में विकरण विशिष्ट भव इसका अङ्गत्व विज्ञान होने से अतो दीर्घो यञि इस सूत्र से अदन्त अङ्ग भव इसके मकारोत्तर अकार का दीर्घ होने पर भवा मस् यह होने पर समुदाय की तिङन्तत्व होने से पदसंज्ञा होने पर, ससजुषो रुः इस सूत्र से पदान्त सकार का रुत्व अनुबन्धलोप होने पर ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः'' इस सूत्र से रेफ का विसर्ग और वर्णसम्मेलन होने पर भवावः यह रूप सिद्ध होता है।

भू धातु के लट् लकार में रूप -

लट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यमपुरुषः	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तमपुरुषः	भवामि	भवावः	भवामः

पाठगत प्रश्न 13.2

1. शप् कब विधान किया जाता है?
2. भू अ ति इस स्थिति में भू के ऊकार का गुण किस सूत्र से होता है?
3. झोऽन्तः इस सूत्र का अर्थ लिखो?
4. भू धातु से लट्, सिप्, होने पर क्या रूप होता है?

13.9 धात्वादेः षः सः॥ (६.१.६२)

सूत्रार्थ - धातु के आदि षकार को सकार हो।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से सकार विधान किया जाता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। धात्वादेः (६/१), षः (६/१), सः (१/१)। धातोः आदिः धात्वादिः तस्य धात्वादेः यह षष्ठीतत्पुरुष समास है। सूत्रार्थ होता है - धातु के आदि षकार के स्थान पर सकारादेश होता है। धातुपाठ में जिन धातुओं के आदिवर्ण षकार है,वे षोपदेश धातुएँ कहलाती है।

उदाहरण - षिध गत्याम्।

सूत्रार्थसमन्वय - षिध् यह धातुपाठ पठित धातु है। अतः उपदेश अवस्था में उसका आदि षकार है। अतः वह षोपदेश है। धात्वादेः षः सः इस प्रकृतसूत्र से उसके आर्दो षकार के स्थान पर सकारादेश होता है। उससे सिध् यह होता है।

13.10 णो नः॥ (६.१.६३)

सूत्रार्थ - धातु के आदि णकार को नकार होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से नकार विधान किया जाता है। इस सूत्र में दो पद हैं। णः (६/१), नः (१/१)। धात्वादेः षः सः इस सूत्र से धात्वादेः (६/१) यह पद अनुवर्तित होता है। धातोः आदिः धात्वादिः तस्य धात्वादेः यह षष्ठीतत्पुरुष समास है। सूत्रार्थ होता है - धातु के आदि णकार के स्थान पर नकारादेश होता है। धातुपाठ में जिन धातुओं के आदिवर्ण णकार है वे णोपदेश धातुएं कहलाती है।

उदाहरण - णम् - नम्, णीञ् - नी, णद, नद।

सूत्रार्थसमन्वय - णम् यह धातुपाठ में पठित धातु है। उपदेशावस्था में उसका आदि णकार है। अतः णोपदेश है। णो नः इस प्रकृतसूत्र से उसके आदि णकार के स्थान पर नकारादेश होता है। अतः नम् यह होता है। तत्पश्चात् लट्, तिप्, शप् होने पर नमति इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं।

णद अव्यक्ते शब्दे यह भ्वादिगणीय धातु है। और वह णोपदेश है। उसके लट् में रूप सिद्ध करने योग्य हैं। वे रूप इस प्रकार हैं - **नदति नदतः नदन्ति। नदसि नदथः नदथ। नदामि नदावः नदामः।**

सिध् धातु से वर्तमाने लट् इस से लट्, तिप्, शप् होने पर सिध् अ ति यह स्थिति होती है। तब - (पुगन्तलघूपधस्य च इस सूत्र में द्रष्टव्य है।)

13.11 इदितो नुम् धातोः (७.१.५८)

सूत्रार्थ - इदित धातु से नुमागम होता है।

टिप्पणियाँ

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से नुम् विधान किया जाता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। इदितः नुम् धातोः यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। इदितः (६/१), नुम् (१/१), धातोः (१/१)। इत् यस्य सः इदित्, तस्य इदितः यह बहुव्रीहिसमास है। अर्थात् जिस धातु का ह्रस्व इकार इत्संज्ञक है वह धातु इदित् है। सूत्रार्थ होता है - इदित धातु से नुमागम होता है। नुम् मित् है। अतः मिदचोऽन्त्यात् परेः इस परिभाषा से अन्त्य अच् से परे होता है।

उदाहरण - टु नदिँ समृद्धौ।

सूत्रार्थसमन्वय - टु नदिँ यह धातु धातुपाठ में पठित है। उसकी टु इसकी ''आदिर्ञिटुडवः'' इस सूत्र से इत्संज्ञा होती है। इकार अनुनासिक है। अतः ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' इस सूत्र से इत् इत्संज्ञक होता है। अतः यह धातु इदित् है। ''इदितो नुम् धातोः'' इस सूत्र से उसको नुम् होता है। मित्त्व होने से ''नुम् मिदचोऽन्त्यात् परः'' इस परिभाषा से मित् नकार पर जो अकार है उससे परे होता है। उससे नन् द् यह स्थिति होती है। ''नश्चापदान्तस्य झलि'' इस सूत्र से इसके नकार का अनुस्वार होता है। तत्पश्चात् ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः'' इस सूत्र से परसवर्ण करने पर नन्द् यह प्राप्त होता है। तब ''वर्तमाने लट्'' इस से लट्, तिप्, शप् होने पर नन्द् अ ति इस स्थिति में वर्णमेलन होने पर नन्दति यह रूप सिद्ध होता है।

णद् धातु के अन्य रूपों में कोई भी विशेष नहीं है। वे रूप हैं - **नन्दति नन्दतः नन्दन्ति। नन्दसि नन्दथः नन्दथ। नन्दामि नन्दावः नन्दामः।**

13.12 पुगन्तलघूपधस्य च।। (७.३.८६)

सूत्रार्थ - पुगन्त लघूपध चाङ्गस्यको गुणः सार्वधातुकार्धधातुकयोः प्रत्ययोः परयोः।

सूत्रव्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से गुण का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद हैं।पुगन्तलघूपधस्य (६/१), च अव्यय। मिदेर्गुणः इस सूत्र से गुणः इति यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित है। अङ्गस्य (६/१) यह अधिकृत है।''सार्वधातुकार्धधातुकयोः'' (७/२) यह सूत्र आता है''अर्ति-ह्री-व्ली-री-क्नूयी-क्ष्माय्यातां पुग्णौ'' इस सूत्र से पुगागम का विधान होता है। अयं पुक् अन्ते यस्य तत् पुगन्तम् अङ्गम् यह बहुव्रीहिसमास है। लघुः उपधा यस्य तद् लघूपधम् अङ्गम् यह बहुव्रीहिसमास है। पुगन्तं च लघूपधं चेति पुगन्तलघूपधम्, तस्य पुगन्तलघूपधस्य यह समाहारद्वन्द्वसमास है।

इस सूत्र में किस के स्थान पर गुण होगा यह स्थान साक्षात् नहीं कहा गया है। किन्तु गुणः यह विधेयपर गुणपद उच्चारित करके गुण विधान किया जाता है। अतः 'इको गुणवृद्धी' इस परिभाषा से इकः यह षष्ठ्यन्त पद यहां उपस्थित होता है। यह सूत्र अङ्गाधिकार में पढ़ा गया है। अङ्गसंज्ञक प्रत्यय पर में होने पर ही फल प्राप्त होता है। अतः प्रत्यये यह पद आक्षिप्त होता है। वहाँ भी सार्वधातुकार्धधातुकयोः यह सप्तमीद्विवचन है। ये दोनों भी प्रत्यय ही है। अतः प्रत्यये इसका प्रत्ययोः यह सप्तमीद्विवचन ग्रहण किया जाता है। तब पद योजना होती है - पुगन्तलघूपधस्य च अङ्गस्य इकः गुणः सार्वधातुकार्धधातुकयोः प्रत्ययोः इति।

और तब सूत्र का अर्थ होता है - सार्वधातुक और आर्धधातुक प्रत्यय परे में रहते पुगन्त लघूपध अङ्ग के इक् के स्थान पर गुण हो।

उदाहरण - सेधति।

सूत्रार्थसमन्वय - ''धात्वादेः षः सः'' इस पूर्वसूत्रोक्तप्रकार से सिध् धातु से ''वर्तमाने लट्'' इस से लट्, तिप्, शप् होने पर सिध् अ ति यह स्थिति होती है। शप् सार्वधातुकम् परे में है तब सिध् यह अङ्ग है।उसका इकार लघुसंज्ञक और उपधासंज्ञक है। अतः ''पुगन्तलघूपधस्य च'' इस प्रकृतसूत्र से इक् के इकार के स्थान पर गुण स्थान आन्तर्य से एकार होने पर सेधति यह रूप सिद्ध होता है।

षिध गत्याम् यह भ्वादिगणीय धातु है। इसके रूप यहाँ तक आए सूत्रों से सिद्ध होते हैं। अतः उन रूपों को छात्र के द्वारा सिद्ध करना चाहिए। सिद्ध रूप नीचे आगे दिए गए हैं - **सेधति सेधतः सेधन्ति। सेधसि सेधथः सेधथ। सेधामि सेधावः सेधामः।**

नीचे कुछ धातुएं दी गई है। यहां तक आए हुए कुछ सूत्रों का प्रयोग करके उनके रूप सिद्ध करने में समर्थ हैं। उन रूपों को अभ्यास के लिए छात्रों के द्वारा सिद्ध करना चाहिए।

1. **पठ व्यक्तायां वाचि** - पठति, पठतः, पठन्ति। पठसि, पठथः, पठथ। पठामि, पठावः, पठामः।
2. **गद व्यक्तायां वाचि** - गदति, गदतः, गदन्ति। गदसि, गदथः, गदथ। गदामि, गदावः, गदामः।
3. **अर्च पूजायाम्** - अर्चति, अर्चतः, अर्चन्ति। अर्चसि, अर्चथः, अर्चथ। अर्चामि, अर्चावः, अर्चामः।
4. **व्रज गतौ** - व्रजति, व्रजतः, व्रजन्ति। व्रजसि, व्रजथः, व्रजथ। व्रजामि, व्रजावः, व्रजामः।
5. **कटैं वर्षावरणयोः** - कटति, कटतः, कटन्ति। कटसि, कटथः, कटथ। कटामि, कटावः, कटामः।
6. **क्षि क्षये** - क्षयति, क्षयतः, क्षयन्ति। क्षयसि, क्षयथः, क्षयथ। क्षयामि, क्षयावः, क्षयामः।
7. **चितीं संज्ञाने** - चेतति, चेततः, चेतन्ति। चेतसि, चेतथः, चेतथ। चेतामि, चेतावः, चेतामः।
8. **तप सन्तापे** - तपति, तपतः, तपन्ति। तपसि, तपथः, तपथ। तपामि, तपावः, तपामः।
9. **शुच शोके** - शोचति, शोचतः, शोचन्ति। शोचसि, शोचथः, शोचथ। शोचामि, शोचावः, शोचामः।

पाठगत प्रश्न 13.3

ऊपर में पढ़े गए पाठ को अवलंबित करके कुछ लघुत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं इनके उत्तर लिखकर अंत में दिए गए उत्तरों से मिलान कीजिए।

1. षोपदेशधातु कौन सी है। उदारहण दीजिए।

2. णोपदेशधातु कौन सी है। उदारहण दीजिए।
3. उपदेश में धात्वादि के षकार का क्या होता है और किस सूत्र से?
4. उपदेश में धात्वादि के णकार का क्या होता है और किस सूत्र से?
5. उपदेश में यदि धातु इदित् है तो क्या होता है और किस सूत्र से?
6. सेधति इस रूप में सिध् धातु के इकार का एकार किस सूत्र से होता है?
7. सार्वधातुक परे में रहते लघूपध अङ्ग के इक् का गुण किस सूत्र से होता है?
8. नन्दति यहाँ नद् धातु उपदेश में किस प्रकार की है?
9. क्या परे में रहते लघूपध अङ्ग के इक् का गुण होता है?

    1. सार्वधातुक
    2. आर्धधातुक
    3. सार्वधातुक और आर्धधातुक
    4. इडागम

10. पुगन्तलघूपधस्य च इसका उदाहरण क्या है।

    1. भवति
    2. सेधति
    3. क्षयति
    4. अक्षैषीत्

11. नन्दति यहाँ नद् धातु का अर्थ क्या है।

    1. वृद्धि
    2. समृद्धि
    3. सत्ता
    4. अव्यक्त शब्द

पाठ का सार

'भूवादयो धातव' इस सूत्र से धातुपाठ में पठित शब्द स्वरूपों की धातुसंज्ञा होती है। धातुएं क्रियावाचक होती हैं। धातु का अर्थ फल और व्यापार होता है। धातु का व्यापार विभिन्न कालों में होता है यह दर्शाने के लिए धातु से परे विभिन्न लकार प्रयोग किए जाते हैं। ये लकार प्रधान रूप से 'लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः' इति इस सूत्र से विधान किए जाते हैं। उन लकारों का वर्तमान काल आदि अर्थ हैं तथा कर्ता, कर्म, भाव ये भी अर्थ हैं। यहां भाव शब्द का अर्थ क्रिया ही है। सकर्मक धातु से परे कर्ता और कर्म में लकार होता है। अकर्मक धातु से पर भाव में लकार होता है। कौन सी धातु से लकार कब कर्ता और कब कर्म में होता है यह विवक्षा के अधीन है।

धातु का अर्थ व्यापार वर्तमान काल में है यह द्योतित करने के लिए 'वर्तमाने लट्' इस सूत्र से लट् का विधान होता है। लकार के स्थान पर 'तिप्तस्झि-सिप्थस्थ-मिब्वस्मस्- तातञ्झ-थासाथांध्वम्-

इड्वहिमहिङ्' इस सूत्र से अट्ठारह आदेश विधान किए जाते हैं। ये लादेश कहलाते हैं। उसके बाद 'लः परस्मैपदम्' और 'तङानावात्मनेपदम्' इन दोनों सूत्रों की पर्यालोचना से यह प्राप्त होता है कि 'तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-वस्-मस् परस्मैपदसंज्ञक' हैं। तङ् प्रत्याहार शानच् और कानच् आत्मनेपदसंज्ञक होते हैं।

उपदेश में जिस धातु का अनुदात्ताच् इत् है, जिस धातु का ङकारः इत् है, उस प्रकार की धातुओं से 'अनुदात्तङित आत्मनेपदम्' इस सूत्र से आत्मनेपदसंज्ञक प्रत्यय विधान किए जाते हैं। उपदेश में जिस धातु का स्वरित अच् इत् है, जिस धातु का ञकार इत् है, और भी उस धातु का क्रियाफल कर्ता को जाता है इस प्रकार की धातुओं से आत्मनेपदविधान 'स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले' इस सूत्र से किया जाता है।

वाक्य में प्रयुक्त अथवा अप्रयुक्त युष्मद् का वाच्य कारक, और धातु से परे विहित लकार का वाच्य कारक यदि समान हो तो धातु से परे मध्यम संज्ञक प्रत्यय होता है ''युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः'' इस सूत्र से। अस्मद् लकार का समानाधिकरण है तो धातु से पर उत्तमसंज्ञक प्रत्यय अस्मद्युत्तम इस सूत्र से विधान होता है। जहाँ एक ही वाक्य में युष्मद् और लकार का सामानाधिकरण्य तथा अस्मद् और लकार का सामानाधिकरण्य ये दोनों नहीं है, तो धातु से परे प्रथमसंज्ञक प्रत्यय शेषे प्रथमः इस सूत्र से विधान होता है।

धात्वधिकारोक्त तिङ् और शित् सार्वधातुकसंज्ञक 'तिङ्शित्सार्वधातुकम्' इस सूत्र से होता है। तिङ्शद्भ से भिन्न धातोः इससे विहित प्रत्यय 'आर्धधातुकं शेषः' इस सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा को प्राप्त करते हैं। किन्तु लिट् के स्थान पर विहित तिङ् लिट् च इस सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञकक होता है। इस प्रकार आशीर्वाद अर्थ में विहित लिङ् के स्थान पर विहित तिङ् लिङाशिषि इस सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञक होता है।

धातु से कर्तऽर्थ और सार्वधातुक पर है तो कर्तरि शप् इस सूत्र से धातु से परे शप् विधान किया जाता है। यदि सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक पर में इगन्त अङ्ग यदि हो तो 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' इस सूत्र से इक् को गुण विधान किया जाता है। इस प्रकार भू अ ति इस स्थिति में भू इसके ऊकार का ओकार होता है। ओकार का भी अवादेश होने पर भवति यह रूप सिद्ध होता है।

झि यह प्रथमबहुचन का प्रत्यय है। उस झकार के स्थान पर अन्त् आदेश झोऽन्तः इस सूत्र से होता है। उससे भवन्ति यह रूप सिद्ध होता है। यञादि सार्वधातुक पर में अदन्त अङ्ग के स्थान पर दीर्घः अतो दीर्घो यञि इस सूत्र से विधान होता है।

पाणिनि द्वारा धातुपाठ में कुछ धातुएं णादित्व षादित्व रूप से उपदिष्ट की गई हैं। उनके णकार का नत्व और षकार का सत्व धात्वादेः षः सः, णो नः इन सूत्रों से होता है।

जैसे सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक पर में रहते इगन्ताङ्ग का गुण होता है, उसके समान ही जिस अङ्ग की उपधा लघ्वी है, वहाँ इग्लक्षण गुण विधान के लिए 'पुगन्तलघूपदस्य च' इस सूत्र में पाणिनि ने विधान किया है।

इस प्रकार ये विषय यहाँ उपन्यस्त हैं।

टिप्पणियाँ

पाठांत प्रश्न

1. लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. धातु के सकर्मकत्व और अकर्मकत्व का सोदाहरण प्रतिपादन कीजिए।
3. लकारों का परिचय दीजिए।
4. वर्तमाने लट् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. काल को आश्रित करके लघुनिबन्ध लिखिए।
6. लः परस्मैपदम् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
7. तङानावात्मनेपदम् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
8. तङानावात्मनेपदम् इस सूत्रस्थ आन इससे चानश् का ग्रहण कहाँ नहीं होता है?
9. अनुदात्तङित आत्मनेपदम् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
10. स्वरितञितः कर्तभिप्राये क्रियाफले इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
11. युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
12. अस्मद्युत्तमः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
13. शेषे प्रथमः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
14. प्रथममध्यमोत्तम के प्रयोग का अवलम्बन करके प्रबन्ध लिखिए।
15. धातु से लकार के स्थान पर तिप् के विधान तक कैसे सूत्र व्यस्थापित करते हैं, यह विशद् वर्णन कीजिए।
16. तिङ् शित् सार्वधातुकम् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
17. आर्धधातुकं शेषः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
18. किसकी सार्वधातुकसंज्ञा अथवा किसकी आर्धधातुकसंज्ञा यह सार संग्रहित कीजिए?
19. सार्वधातुकार्धधातुकयोः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए?
20. अतो दीर्घो यञि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
21. पुगन्तलघूपधस्य च इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
22. इन रूपों को ससूत्र सिद्ध कीजिए। - भवति, भवन्ति, भवामि, भवामः।
23. ससूत्र रूपों को सिद्ध कीजिए। - नन्दति, सेधति, नन्दन्ति, सेधामि।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. लादेशाः सकर्मकधातुभ्यः कर्मणि कर्तरि च भवन्तीति प्रथमवाक्यम्। लादेशाः अकर्मकेभ्यः धातुभ्यः भावे कर्तरि च विधीयन्ते द्वितीयं वाक्यम्।
2. यस्य धातोः अर्थः फलम् एकस्मिन् कारके वर्तते, व्यापारः अपरस्मिन् कारके वर्तते स धातुः सकर्मकः कथ्यते।
3. यस्य धातोः फलम् यस्मिन् कारके वर्तते, व्यापारः अपि तस्मिन्नेव कारके वर्तते स धातुः अकर्मकः कथ्यते।
4. दश।
5. षट्।
6. चत्वारः।
7. लेट्।
8. यस्य धातोः अर्थः व्यापारः अर्थात् क्रिया वर्तमानकाले वर्तते स धातुः वर्तमानक्रियावृत्तिः कथ्यते। वर्तमाने (काले) क्रियायाः वृत्तिः यस्य स वर्तमानक्रियावृत्तिः धातुः।
9. भू।
10. लट्। वर्तमाने लट्।

12.2

1. तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-वस्-मस्-त-आताम्-झ-थास्-आथाम्-ध्वम्-इट्-वहि-महिङ् इति एते अष्टादश लादेशाः।
2. तिप् तस् झि सिप् थस् थ मिप् वस् मस् इति एतेषां परस्मैपदसंज्ञा।
3. त आताम् झ थास् आथाम् ध्वम् इट् वहि महिङ् इति एवञ्च शानच् कानच् इति एतेषाम् आत्मनेपदसंज्ञा।
4. लः परस्मैपदम्।
5. तङानावात्मनेपदम्।
6. यदा अनुबन्धरहितस्य उच्चारणं क्रियते तदा तेन अनुबन्धसहितस्य ग्रहणं कर्तव्यमिति निरनुबन्धकग्रहणे सानुबन्धकस्य इति परिभाषार्थः।

टिप्पणियाँ

12.3

1. आत्मनेपदसंज्ञक।
2. आत्मनेपदसंज्ञक।
3. धातुनिष्ठानि।
4. द्वन्द्वसमासस्य आदौ मध्ये अन्ते वा विद्यमानम् द्वन्द्वसमासस्य अनङ्गभूतम् पदम् द्वन्द्वसमासे विद्यमानैः पदैः प्रत्येकम् अभिसम्बध्यते, अन्वेति इति।
5. लस्य।
6. भ्वादिप्रकरणे आलोचितानि आत्मनेपदविधानस्य कानिचन निमित्तानि - उपदेशे यस्य धातोः अनुदात्ताच् इत् अस्ति, यस्य धातोः ङकारः इत् अस्ति द्वे निमित्ते। एवञ्च उपदेशे यस्य धातोः स्वरिताच् इत् अस्ति, यस्य धातोः ञकारः इत् अस्ति, अपि च तद्धातोः क्रियाफलं कर्तारम् गच्छति इत्यपि द्वे निमित्ते आत्मनेपदविधानस्य।
7. ञितो धातोः कर्तृगामिनि क्रियाफले आत्मनेपदं विधीयते।
8. एधँ वृद्धौ। कमुँ कान्तौ।
9. आत्मनेपदनिमित्तहीनः धातुः हि शेषपदार्थः।
10. तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः।
11. तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः।

12.4

1. वाक्ये युष्मद् लस्य समानाधिकरणः अस्ति चेत् मध्यमः विधीयते।
2. वाक्ये अस्मद् लस्य समानाधिकरणः अस्ति चेत् उत्तमः विधीयते।
3. वाक्ये मध्यमोत्तमयोः अविषये प्रथमः विधीयते।
4. वाच्यम्, अर्थः, अभिधेयः।
5. युष्मद्-लकारयोः सामानाधिकरण्यं चेत् धातोः मध्यमो विधेयः। अस्मद्-लकारयोः सामानाधिकरण्यं चेत् धातोः उत्तमो विधेयः इति उक्ताद् एतद्वयाद् अन्यः शेषः। सामानाधिकरण्यद्वयं वाक्ये नास्ति चेत् शेषः अस्ति। एवञ्च तदा धातोः प्रथमसंज्ञकः विधेयः।

13.1

1. धात्वधिकारोक्तः तिङ् शित् च सार्वधातुकसंज्ञः।
2. तिङ्शद्भ्योऽन्यो धातोरिति विहितः प्रत्ययः, लिडादेशः तिङ्, आशिषि लिङादेशः तिङ् च आर्धधातुकसंज्ञकाः भवन्ति।

3. तिङ्शद्भ्योऽन्यो धातोरिति विहितः प्रत्ययः शेषः।
4. कोऽपि लकारः सार्वधातुकसंज्ञकः नास्ति, तिङ्भिन्नत्वात् शिद्भिन्नत्वाच्च।
5. लिडादेशः तिङ्, आशिषि लिङादेशः तिङ् च आर्धधातुकसंज्ञकः भवतः।
6. आर्धधातुकम्।
7. लुटि लृटि लुङि लृङि च धातु-लकारयोः मध्ये तास् स्य च्लि स्य एते विधीयन्ते। ते धातोः विहिताः तिङ्भिन्नाः, शिद्भिन्नाः च सन्ति। अतः आर्धधातुकसंज्ञकाः सन्ति।

13.2

1. कर्तर्थे सार्वधातुके परे धातोः शप् भवति।
2. सार्वधातुकार्धधातुकयोः इति सूत्रेण।
3. प्रत्ययावयवस्य झकारस्य स्थाने अन्त् इत्यादेशः स्यादिति झोऽन्तः इति सूत्रस्यार्थः।
4. भवसि।

13.3

1. उपदेशे यस्य धातोः आदिः षकारः भवति स षोपदेशधातुः। यथा षिध।
2. उपदेशे यस्य धातोः आदिः णकारः भवति स णोपदेशधातुः। यथा णीञ्।
3. उपदेशे धात्वादेः षस्य सकारः भवति, धात्वादेः षः सः इति सूत्रेण।
4. उपदेशे धात्वादेः णस्य नकारः भवति, णो नः इति सूत्रेण।
5. उपदेशे यदि धातुः इदित् अस्ति तर्हि इदितो नुम् धातोः इति सूत्रेण तस्य नुमागमः भवति।
6. पुगन्तलघूपधस्य च।
7. पुगन्तलघूपधस्य च।
8. नन्दति यहाँ नद् धातु उपदेश में टुनदि यह है।
9. ३
10. २
11. २

॥ इति त्रयोदशः पाठः॥